हमारी प्रमुख पत्रिकाएँ

(1) अखण्ड ज्योति हिंदी (मासिक)
वार्षिक मूल्य– 108/-,आजीवन–2000/-
अखण्ड ज्योति अंग्रेजी (द्वि–मासिक)
वार्षिक मूल्य– 78/-
पता: अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामंडी,मथुरा
फोन: (0565) 2403940

(2) युग निर्माण योजना (मासिक)
वार्षिक मूल्य- 54/-, आजीवन– 1000/-
युग शक्ति गायत्री (गुजराती मासिक)
वार्षिक मूल्य- 85/-, आजीवन-1800/-
पता - युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन - (0565) 2530128,2530399
फैक्स नं.-(0565) 2530200

(3) प्रज्ञा अभियान (पाक्षिक)
वार्षिक मूल्य- 30/-
पाक्षिक वीडियो पत्रिका: युग प्रवाह
वार्षिक मूल्य- 1500/-
पता: शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखंड)
फोन:- 01334-260602

JS 72

राम का चरित्र हमारा प्रेरणास्रोत

(प्रवचन)

जन्म शताब्दी
1911 2011

– श्रीराम शर्मा आचार्य

माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय

यह पुस्तक आद्यशक्ति माँ गायत्री की कृपा से आपके पास आई है। इसे पवित्र स्थान पर रखें, परिवार में सबको पढ़ाएँ, मुख्य अंश नोट करें, उन्हें अपने आचरण में ढालें। पढ़कर पुस्तक किसी अन्य पात्र व्यक्ति को दे दें, ताकि ज्ञान का आलोक जन-जन के जीवन को प्रकाशित करता चले। दीप से दीप जलता चले। आप भी कुछ पुस्तकें समाज में बाँटें।

सौजन्य से :

मूल्य : तीन रुपये

राम का चरित्र हमारा प्रेरणा स्त्रोत

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! पिछले दिनों जन्माष्टमी के अवसर पर हमने आपको यह बतलाया था कि भगवान अपनी लीला के माध्यम से किस तरह से व्यक्ति, परिवार एवं समाज निर्माण के अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। हमारा लक्ष्य ध्रुव की तरह साफ है। हम व्यक्ति निर्माण की बात करना चाहते हैं, परिवार का स्तर, जो नष्ट हो गया है, उसका हम विकास करना चाहते हैं। हम व्यक्ति और समाज के बीच की कड़ी की स्थापना करना चाहते हैं, जिसका नाम परिवार है। इसी में से हीरे, मोती, जवाहरात निकलते हैं। वह आज चरमरा गया है। उसे हम ठीक करना चाहते हैं। परिवार को हमें शिक्षित करना है, संस्कारित करना है।

बच्चा जब माँ के गर्भ में होता है, तब से लेकर तीन साल तक, जब तक वह कुछ बड़ा होता है, उसकी अस्सी प्रतिशत शिक्षा समाप्त हो जाती है। भावना, संवेदना के संदर्भ में वह सब सीख जाता है। अगर आप पाँच साल के बच्चे बन जाएँ तो मेरी समझ से आपके संस्कार को जाग्रत करने का समय लगभग एक वर्ष नौ महीने पहले ही समाप्त हो गया था। बचपन ही संस्कार का महत्त्वपूर्ण समय है। आप पब्लिक स्कूलों में हजारों रुपए महीने का शिक्षण दिला सकते हैं, जहाँ बच्चा क्रीज किया हुआ कपड़ा पहनना, जूते पर पॉलिश करना, थैंक यू वेरी मच कहना सीख जाएगा, परंतु जो संस्कार हम परिवार के अंतर्गत दे पाते हैं, वह कदापि इन स्कूलों में संभव नहीं है। संस्कार कहाँ से आता है? वह माँ-बाप से आता है।

हम खुशबूदार परिवार बसाना चाहते हैं

मित्रो, आज परिवार संस्था का नाश हो गया है। आज कहीं भी हमें परिवार दिखलाई नहीं पड़ते

हैं। वे काम-वासना के क्रिया-कलाप वाले मात्र केंद्र रह गए हैं। उनके अंदर यह ख्याल तथा प्रयास कहाँ है कि परिवार के अंतर्गत वे सोचें कि हमें परिवार समाज, देश एवं संस्कृति के लिए एक महान रत्न देना चाहिए, जो प्रगति कर सके। दो आदमी मिलकर एक तीसरी महान आत्मा बनाएँ, ऐसा साहस किसी में नहीं है। आज परिवार वासना प्रधान बन गया है। ऐसी स्थिति में हम एक नया परिवार बसाना चाहते है, जिसमें से बेहतरीन चीजें निकल सकें। हम खुशबूदार परिवार बसाना चाहते हैं। मित्रो, चंदन के जंगल के पास जो भी पेड़ उगते हैं, वे भी खुशबूदार होते हैं। हम चाहते हैं कि एक ऐसा ही परिवार बने। हम परिवार एवं समाज का वातावरण अच्छा बनाना चाहते हैं। शालीनता का, व्यावहारिकता का वातावरण पैदा करना चाहते हैं, ताकि इनसान को देखकर लोग परिवार एवं समाज की स्थिति को समझ-बूझ सकें। आज हमारे अंदर हैवान काम कर रहा है। वह केवल इनसान का चोला पहन आया है। अभी हमारे

अंदर का महामानव, ऋषि, भगवान, संत कहाँ जागा है? वैसा जीवन कहाँ आया है? हम चाहते हैं कि हम इनसान का जीवन जिएँ , ऋषि एवं संतों का जीवन जिएँ , मानवता का जीवन जिएँ तथा देश एवं समाज का उत्थान करें।

महामानवों के जीवनचरित्र हमारे इष्ट बनें

मित्रो, हम अपने आप को तथा दूसरों को नसीहत देने के लिए चले हैं। हम मिशन की एक रूपरेखा बनाकर चल पड़े हैं। आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमें मंजिल तक चलना है। महापुरुषों का, महामानवों का जीवनचरित्र हमारी मंजिल है, जहाँ तक हमें चलना है। यह हमें ध्यान रखना चाहिए। जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनकी शिक्षा, उनकी वाणी हमारे लिए उपयोगी है, परंतु इससे भी महत्त्वपूर्ण है उनकी जीवन जीने की कला, जो कि हमें सीखनी चाहिए और उससे प्रेरणा लेनी चाहिए तथा अपना आत्मविकास करना चाहिए। महापुरुषों ने जिंदगी को कैसे जिया, असल में प्रेरणा

हमें वहाँ से मिलती है। उन्होंने क्या कहा, यह हमें मालूम नहीं है। अगर हम जिंदगीभर बकवास करते हुए उसे समाप्त कर दें तो भी उसका कोई प्रभाव समाज पर नहीं होगा। क्योंकि उस सिद्धांत को, जो हम कहना चाहते हैं, उसका समावेश हमने अपने जीवन में नहीं किया है। इस कारण से उसका कोई प्रभाव नहीं होने वाला है। हमारे महापुरुषों, अवतारों की कथाएँ इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं कि उनकी वाणी तथा कर्म में कोई फरक नहीं था।

मन, वाणी और कर्म जब एक जगह मिल जाते हैं, तो त्रिवेणी संगम बन जाता है। उस समय आदमी शक्तिपुंज बन जाता है। साहसी, ताकतवर बन जाता है। उस समय उसकी आँखों में से बिजली निकलती है। उस समय उसका व्यक्तित्व मनुष्यों के ऊपर छाता हुआ नजर आता है तथा वह व्यक्ति सूर्य की तरह चमकता हुआ नजर आता है। मन, वाणी, कर्म में एकरूपता का समावेश जिसमें हो जाता है, उसे हम भगवान, महामानव, अवतार,

ऋषि, संत व देवता कहते हैं। उनके चरणों की हम वंदना करते हैं। उनसे हम प्रेरणा ग्रहण करते हैं। समुद्र में लाइट हाउस होता है, जो आने वाले जहाजों को दिशा का ज्ञान कराता है। उसी प्रकार ये लोग करते हैं तथा समाज के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। आप भी भगवान हैं तथा अवतारी चेतना हैं। रामायण में कहा गया है "ईश्वर जीव अंश अविनाशी।" अतः आप सभी भगवान के अंश हैं।

लोकोपयोगी प्रेरणा देते हैं धार्मिक दृष्टांत

मित्रो, पिछले दिनों हमने जन्माष्टमी के अवसर पर आपको बतलाया था कि हमें उक्त बात को समझना चाहिए तथा इन अवतारों के कथानकों को लेकर समाज के बीच में जाकर लोगों को प्रेरणा देनी चाहिए। क्योंकि हमारा देश गाँवों से भरा है। अधिकांश व्यक्ति कम पढ़े-लिखे हैं, उन्हें हम केवल सरल शब्दों में समझा सकते हैं। इस कार्य में कथानक बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते

हैं। इस प्रकार धार्मिक विचारधारा के द्वारा ही हम लोगों को समझा सकते हैं। महात्मा गांधी ने भी धार्मिक विचारधारा को साथ लिया तथा प्रार्थना को स्थान दिया। "रघुपति राघव राजा राम। पतित पावन सीता राम।" इस प्रकार उन्होंने रामराज्य की दुहाई दी। उन्होंने धर्म की जय बोली। धार्मिक विचारधारा के अलावा इस देश की जनता को हम किसी कार्य के बारे में समझा नहीं सकते हैं।

धर्म ही एकमात्र धुरी नवनिर्माण की

हम यहाँ के लोगों को फिजिक्स, सिविक्स, सोसियोलॉजी नहीं समझा सकते। यह समझाना बहुत ही कठिन है। हम केवल धर्म के आधार पर ही समझा सकते हैं। धर्म हमारी जीवात्मा की भूख है। ये दोनों ही परिस्थितियाँ हिंदुस्तान की फिलोसफी-दर्शन के अनुसार तथा यहाँ की गई-गुजरी परिस्थिति के हिसाब से आवश्यक हैं। परिवार के लोगों को संस्कारवान बनाने तथा समाज के लोगों को नसीहत देने, दोनों के लिए धर्म से बढ़कर कोई दूसरा साधन

नहीं है। इसमें अपने क्रिया-कलाप तथा व्याख्यान दोनों की संगति बिठाना परम आवश्यक है, तभी हम इसका प्रभाव दूसरों पर डाल सकते हैं। महापुरुषों, संतों ने इसी प्रकार अपने जीवन में धारण किया, जिसका प्रभाव समाज, देश व संस्कृति पर पड़ा। श्रीकृष्ण भगवान के गीता के आख्यान से ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह जानना आवश्यक है कि उनका व्यवहार और कार्य कैसा था? आचार्य जी को देखने के साथ, सुनने के साथ, आचार्य जी के जीवन के ६५ पन्नों को भी देखना होगा, पढ़ना होगा, तभी आप आचार्य जी को समझ सकते हैं।

जनमानस का परिष्कार होगा जीवन-चरित्र की प्रेरणाओं से

साथियो, हम आप से यह निवेदन कर रहे थे कि हमें लोकमंगल के कार्य के लिए, जनमानस का परिष्कार करने के लिए महामानवों के चरित्र को लेना पड़ेगा। उसके माध्यम से ही जनचेतना जगाने का कार्य करना पड़ेगा, तभी वह प्रभावकारी व

हितकारी सिद्ध हो सकती है। परंतु एक बात आपको बतलाना चाहता हूँ कि कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं है। जो भी इस मनुष्य शरीर में आया है, वह कहीं न कहीं अवश्य गलती कर रहा है। इसलिए हमें अच्छे चेहरों का फोटो खींचने व दिखाने के स्थान पर उनके चरित्र का जो अच्छा पक्ष है, श्रेष्ठ गुण है, उसको लेना चाहिए। उनकी बुराइयों पर हमें ध्यान नहीं देना चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण के शादी-विवाह के मामले को हमने कभी भी नहीं लिया है। हमने अपने पिताजी तथा माताजी के उस दृश्य को कभी भी नहीं देखा है, जब वे आपस में हँस-बोल रहे थे। श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ क्या रास किया, क्या मनोरंजन किया, हमें नहीं देखना है, क्योंकि वे हमारे पिता हैं। पिता के वे रूप देखना हमें पसंद नहीं हैं। जैसे दृश्य को देखकर हमारी आँखें बंद हो जाती हैं, झुक जाती हैं, वैसे दृश्य को हम देखना नहीं चाहते हैं। हमें उनके शिक्षण वाला पहलू चाहिए। हमें उनका चक्रसुदर्शन वाला पहलू चाहिए। हमें

उनका गीता का उपदेश सुनाता हुआ पहलू चाहिए, जिससे हम प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें।

मित्रो, दूसरा वाला पहलू जो हम बतलाना-सिखाना चाहते हैं, वह रामायण वाला पहलू है। वह भगवान राम के द्वारा दिया गया शिक्षण है, जो हम आपको बतलाना चाहते हैं। रामायण में राम का जो शिक्षण है, प्रेरणा है, उस ओर हम लोगों को घसीटकर ले जाना चाहते हैं। हाथी एवं घोड़े को रस्सी से बाँधकर, घसीटकर ले जाते हैं। हम जनसामान्य को, मनुष्य समुदाय को भी इसी प्रकार से घसीटना चाहते हैं। इनकी रस्सी क्या होगी? महामानवों के जीवन-चरित्र, श्रीराम, श्रीकृष्ण का जीवन-चरित्र, जिसको हम आपको पढ़ाते हैं। वाल्मीकि रामायण के उस पहलू को, जो हमारे उद्देश्य के काम आ सकते हैं, उसे भी हम आपको पढ़ाना चाहते हैं। अतः आप सभी से हमारी प्रार्थना है कि आप जब कभी भी जनता के बीच जाएँ या आप स्वयं पढ़ें, उस समय आप केवल वे बातें लोगों को बतलाने का प्रयास

करें, जो प्रेरणादायक हों तथा हमारे उद्देश्यों को पूरा कर सकती हों।

हमारा मिशन बहुत दिनों से सत्यनारायण व्रतकथा सुनाता रहा है। हम केवल सत्य बातों को मानेंगे, उसे सुनाएँगे। आप मजहब की हर बात न मानें, जो सत्य हैं उसे मानें, क्योंकि भगवान उसे कहते हैं जो सत्य है। अतः आप सत्य को, विवेक को, इनसाफ को नारायण मानिए तथा उसी कार्य के लिए गतिशील रहिए तो आपको लाभ होगा।

अब हम आपसे यह कहते हैं कि आप रामायण के माध्यम से परिवार, समाज तथा देश को नई प्रेरणा तथा प्रकाश दीजिए। उसके नए पन्ने पलटकर सबको बतलाइए। भगवान राम के बहुत से पन्ने बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं तथा बहुत से पन्ने ऐसे हैं जिस पर बहस करना हमें मंजूर नहीं है। भगवान की वह बात हमें नामंजूर है, जो अनुपयोगी है। हमारा उस अंश से ज्यादा संबंध है जो उपयोगी हो सकता है, दिशा दे सकता है। रामचंद्र जी ने

रावण मारा था, श्रीकृष्ण जी ने गोवर्धन उठाया था, इस प्रकार की बातें तो हम मानने के लिए तैयार हैं, पर भगवान की अनर्गल बातों को हम नहीं मानेंगे। अत: आप यह समझ लीजिए कि आप इस तरह की बातें अपने व्याख्यानों में कभी नहीं करेंगे। हम वास्तव में किसी देवी, देवता या किताब के गुलाम नहीं हैं। हम तो सत्य के पुजारी हैं। हम अक्ल, सत्य और इनसाफ के गुलाम हैं। आप गलत बातों का समर्थन मत करें। श्रीकृष्ण भगवान ने सोलह सौ रानियाँ की थीं, तो हम तीन कर लें तो क्या गलत है? बेकार की बातें मत करें, अपने विचारों को ठीक रखें।

हमारी नई रामायण में है प्रेरणा-मार्गदर्शन

हमने इसी उद्देश्य से एक नई रामायण का सृजन किया है, जिसमें केवल काम की बातों की गुंजाइश है। इसमें प्रेरणा है, मार्गदर्शन है। हम चाहते हैं कि आप इन बातों को मानें, शिक्षा ग्रहण करें तथा समाज को रामायण के माध्यम से इन बातों को

बतलावें। अगर आप इन बातों को समाज में बतलाने का प्रयास करेंगे तो प्रबुद्ध वर्गों के बीच रामायण अंधविश्वास, मूढ़मान्यताएँ फैलाने वाला ग्रंथ बन जाएगा और दुनिया का सत्यानाश कर देगा। श्रीकृष्ण की यह बात कि रुक्मिणी का भाई उनकी शादी नहीं करना चाहता था, परंतु श्रीकृष्ण उसे भगाकर ले गए तथा शादी कर ली, यह बात हमें नामंजूर है। किसी लड़की को इस तरह भगाना न्यायसंगत नहीं है। यह गलत बात हमें नामंजूर है। अत: आपको आगाह किया है कि रामायण की कथा बतलाते समय इस तरह की बातें न करें जो नैतिकता पर आघात पहुँचाएँ और लोगों के विचारों को गलत कर दें। अत: आपको सावधान रहना चाहिए।

मित्रो! गलती हर आदमी से हो सकती है, रामचंद्र जी से भी हो सकती है। श्रीकृष्ण भगवान से भी हो सकती है। साथियो, हम नहीं जानते हैं कि कौन विश्वामित्र है और कौन विश्वामित्र नहीं है? कितना अंश उनका पूजने योग्य है, कितना नहीं, यह

हम नहीं जानते हैं। हमें तो अच्छे अंश की आवश्यकता है, उसका ही पूजन करते हैं। हमें तो इसके अच्छे पहलुओं की आवश्यकता है। उनकी शराफत एवं दिशाओं से मतलब है। अगर ये दृष्टिकोण आपका होगा तो आप गीता, रामायण, भागवत सुना सकते हैं और प्रेरणा दे सकते हैं। अगर ये दृष्टिकोण नहीं रखेंगे तो आप अपना भी सत्यानाश करेंगे तथा रामचंद्र जी एवं श्रीकृष्ण जी का भी सत्यानाश करेंगे।

हम चाहते हैं कि आपकी अपनी दृष्टि हो। आप को किसी को भी अपनी अक्ल नहीं बेचनी चाहिए। आपको हमने श्रीकृष्ण जी की कथा के बारे में बतलाया था। आज मैं आपको रामचंद्र जी की कथा के बारे में बतलाना चाहता हूँ कि आपको किस तरह से कथा सुनाना चाहिए?

सुसंतति कैसे

रामचंद्र जी की कथा श्रीकृष्ण की तरह ही है कि मनु-शतरूपा ने तप किया था, तो दशरथ के राम पुत्र रूप में पैदा हुए। मित्रो, तप करने से ही अच्छे

एवं सुसंस्कारी बच्चे पैदा हो सकते हैं। अगर अच्छे बच्चे पैदा करना है, तो आपको तप करना होगा। तप करने का अर्थ है शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं को ठीक करना होगा। आप जब स्वयं संस्कारवान बनेंगे, तभी आप संस्कारवान बच्चे पैदा कर सकते हैं। अगर साँचा, ठप्पा ठीक नहीं है, तो खिलौना कैसे ठीक बनेगा। इसके लिए अपने आप को गलाइए।

मित्रो, यज्ञीय वातावरण में संस्कारवान बच्चे पैदा होते हैं। एक कथा आती है कि दशरथ जी द्वारा यज्ञ किया गया था और उसके बाद चरु-खीर बाँटा गया था, तो उससे चार भगवान—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न पैदा हुए थे। गुरुजी आप हवन करा सकते हैं तथा हमारी बीबी को दो बच्चा दे सकते हैं? बेटे हम नहीं करा सकते हैं। आप पहले अपने परिवार में इस तरह का त्यागमय वातावरण बनाइए, जैसे कि दशरथ के यहाँ था और जैसा कि राम-सीता, लक्ष्मण-उर्मिला आदि का त्यागमय जीवन

था। वैसा वातावरण आपके घर-परिवार का होगा, तभी यह हो सकता है। उर्मिला का त्याग सीता से भी ज्यादा है। जिस घर में ऐसा वातावरण होगा, वहाँ संस्कारवान बच्चे पैदा होंगे। रामचंद्र जी और भरत जी गेंद खेल रहे थे। भरत जी खेलने में कमजोर थे, परंतु रामचंद्र जी उन्हें बार-बार जिता देते थे। अपने से छोटों की हिम्मत और इज्जत बढ़ा देने में ही महानता है—हारा आदमी जीत जाता है। रामचंद्र जी ने भरत को गुलाम बना लिया। सारी जिंदगी वे राम के गुलाम रहे। यह है भगवान का स्वभाव, जो कि हमारे लिए प्रेरणा लेने एवं देने लायक है। ऐसे ही भगवान को लोग मानते हैं। आज घटिया भगवान को कोई नहीं मानता है।

भगवद् तत्त्व के मर्म को समझें

एक बार कौशल्या जी रामचंद्र जी को पालने में झुला रही थीं, उस समय भगवान ने वही गीता वाला ज्ञान दिया कि भगवान इनसान के रूप में भी हो सकता है। विराट ब्रह्म को, निराकार को कौन

देख-समझ सकता है। निराकार भगवान तो ऊँचे विचारों में है, आदर्शवादिता में है, उत्कृष्ट चिंतन में है, भलाई में है। साकार मानना है तो सारा समाज ही, सारे समाज के लोग ही भगवान हैं।

आज लोग अपने-अपने भगवान के लिए लड़ते रहते हैं। हिंदू, मुसलिम, सिख, ईसाई के भगवान एक हैं। भगवान हिंदू, मुसलिम सबके लिए होगा, तो सफेद रंग का ही होगा। इसमें फरक हमने और आपने पैदा कर दिया है। सूर्य, चंद्र जब एक ही हो सकते हैं, तो भगवान दो कैसे हो सकते हैं? मंदिर में रखे हुए भगवान जड़ हैं, हम इसके द्वारा अपनी भावना को जाग्रत करते हैं। इसमें कोई चमत्कार नहीं है। चमत्कार है तो मनुष्य की भावना में है। यह कूड़े में, गोबर, लकड़ी, पत्थर सब में हो सकता है। आप भगवान की पूजा करते हैं, तो भगवान के बारे में जानने का भी प्रयास करें, तभी आपको सही बातें मालूम पड़ेंगी। रामचंद्र जी ने विराट ब्रह्म के बारे में काकभुशुंडि एवं कौशल्या को दिखाया और कहा

कि इसकी सेवा करना ही भगवान की पूजा है। इसे हर व्यक्ति को समझना चाहिए।

तपस्वी जीवन की प्रेरणा

भगवान के भक्त के लिए हीरा तराशना आवश्यक है अर्थात अपनी अंतर्चेतना को परिष्कृत करना आवश्यक है। इसके लिए तप करना आवश्यक है। विश्वामित्र, राम और लक्ष्मण को इसके लिए जंगल में ले गए और कहा कि तप करना परम आवश्यक है। उन्होंने कहा कि अनीति से विरोध करना पड़ेगा, आदर्श पद्धति का अवलंबन लेना पड़ेगा। समाज को ऊँचा उठाने के लिए तप करना यानी तपस्वी का जीवन जीना होगा। वे सहर्ष तैयार हो गए एवं चले गए। इसके बाद ही भगवान कहलाए। महापुरुषों के लिए इसी प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है।

आदर्श विवाह किस प्रकार

राजा जनक के चार लड़कियाँ थीं। राजा दशरथ के यहाँ एक यज्ञ हुआ था जिसके फलस्वरूप चार

लड़के पैदा हुए। इन चारों का जनक की पुत्रियों से विवाह हो गया। हम इसी प्रकार का वातावरण बनाना चाहते हैं। हम दहेज के विरोधी हैं, लेकिन अगर कोई स्वेच्छा से कन्या को कुछ देता है, तो हमें ऐतराज नहीं है, परंतु पैसा दिखाकर नहीं देना चाहिए। आप पेटी में रखकर इच्छा से दे दीजिए अथवा बेटी के नाम जमा कर दीजिए। दहेज हर दृष्टि से अनैतिक है। इम्मोरेल है। इसे तत्काल बंद करना चाहिए। यह प्रेरणा हमें रामायण से लेनी चाहिए।

इसी प्रकार रामायण से हमें अन्यान्य प्रेरणादायक दृष्टांत लेकर लोगों को समझाना चाहिए। एक बार दशरथ जी को अपना सफेद बाल दिखलाई दिया। उन्होंने सोचा कि हमें क्या करना चाहिए? यह सम्मन है मौत का। दशरथ जी ने सफेद बाल देखकर अपने बड़े लड़के रामचंद्र जी को बुलाया और कहा कि आप इस राजकाज को देखें और अब हमें वानप्रस्थ

लेना है। आप छोटों को देखें तथा परिवार के उत्तरदायित्व को सँभालें। यह प्राचीन परंपरा थी कि लोगों को जीवन के उत्तरार्द्ध में वानप्रस्थ लेना पड़ता था तथा समाज का उत्तरदायित्व उठाना पड़ता था। समाज में अलख जगाना पड़ता था।

इससे रामचंद्र जी के जीवन में धर्मसंकट आ गया। वस्तुत: इसके बिना हम यह नहीं जान सकते हैं कि रामचंद्र जी, भरत जी, लक्ष्मण जी आदि कितने महान थे। जब रामचंद्र जी के सामने यह प्रश्न आया कि आप राजपाट देखेंगे अथवा जंगल में वनवास के लिए जाएँगे तो उन्होंने देखा कि सिद्धांतों के लिए कष्ट उठाना, मुसीबत सहना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, बजाय इसके कि हम राजपाट देखें। उन्होंने समाज के उत्कर्ष के लिए, सिद्धांतों के लिए चौदह वर्ष के लिए वनवास को सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्होंने राजपाट जो ऐयाशी का काम था, उसे ठुकरा दिया। उन्होंने ऋषियों के साथ घुलने-मिलने, राक्षसों से लोहा लेने तथा जंगलों में रहकर

तपस्वी जीवन जीने को ज्यादा महत्त्व दिया और वनवास को सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्होंने सोचा कि हमें उसी काम को करना चाहिए जिसकी ऋषियों को आवश्यकता है; देश को, संस्कृति को आवश्यकता है। खेती का काम कोई भी कर सकता है। खेती का काम आपका नौकर कर सकता है। आप समाज में जाइए और समाज की सेवा कीजिए।

राम का वनवास इसलिए

भगवान रामचंद्र जी ने भी समाज की सेवा के लिए वनवास जाना स्वीकार किया। इस वनवास के समय उनके सामने ऐसी-ऐसी बेहतरीन घटनाएँ हुईं, जिसके द्वारा उन्हें प्यार, मोहब्बत मिला। उन्होंने न जाने कितने लोगों को दिशाएँ दीं, प्रेरणाएँ दीं। शबरी की घटना हमें याद आती है। वे उसके पास पहुँचे और उससे कहा कि हम बहुत भूखे हैं। शबरी ने बेर चखकर देखा तथा मीठे बेर को उन्हें खिलाती चली गई। शबरी ने राम से पूछा कि क्या

आप वही राम हैं जिसका मैं जप करती हूँ। हाँ, मैं वही राम हूँ। उसने पूछा कि आप अयोध्या से यहाँ क्यों आए? रामचंद्र जी बोले—"शबरी, हमेशा भगवान भक्त के पास आते हैं। हम सूरदास के पास गए थे। हम राजा बलि के पास भी भीख माँगने के लिए गए थे। सुदामा के भी हमने पैर धोए थे। महर्षि भृगु ने हमारे कलेजे में लात मारी थी। मीरा के पास मैं गया हूँ। मैं भक्त का गुलाम हूँ। भक्त भगवान से बड़ा है। शबरी तू जो रोज रास्ते को बुहारती है, वह महान भक्ति है। यह तुम्हारी असली भक्ति है।"

मित्रो, एक और भक्त की याद आ गई। सीताजी को रावण चुराकर ले जा रहा था। जटायु इस कांड को देखकर द्रवित हो गया। उसने रावण से कहा कि दूसरे की पत्नी को इस तरह से चुराकर ले जाना पाप है। रावण बोला कि तू चुपचाप बैठ और बेकार की बातें मत कर। जटायु को आक्रोश आ गया और वह अनीति से लड़ने के लिए तैयार

हो गया। यद्यपि वह मर गया, परंतु अमर हो गया। आज इस प्रकार के लोग हो जाएँ तो फिर समाज में गुंडे कहाँ रह सकते हैं? समाज के लोगों को संगठित होकर अनीति के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए। हार जाने से कोई असफल नहीं होता। हमारे समाज में ईसामसीह असफल नहीं हुए। लोगों ने उनके हाथ-पैरों में कील ठोंक दी थी, परंतु लोग सफल नहीं हुए। जो आदमी सिद्धांतों के लिए जिए हैं, वे अमर हैं। सुकरात ने जहर पिया, फिर भी वे मरे नहीं, अमर हैं। रामचंद्रजी मरे नहीं, वे अमर हैं। जटायु जीत गया था। रामचंद्र जी आए और उसके जख्मों को अपने आँसुओं से धोया, अपने हाथों से साफ किया तथा प्यार दिया। उन्होंने कहा कि कहो तो हम तुम्हें स्वर्ग भेज दें, कहो तो मोक्ष प्रदान कर दें। उसने कहा कि यह सब हमें नहीं चाहिए। मित्रो, भगवान के प्यार, मोहब्बत से बढ़कर कुछ भी नहीं है। उसने कहा कि हमें यह प्राप्त हो गया, हम धन्य हो गए, आप चिंता न करें।

भगवान का प्यार कैसा होता है?

भगवान के प्यार के तीन तरीके हैं—पहला, भगवान जिसे प्यार करते हैं, उसे 'संत' बना देते हैं। संत यानी श्रेष्ठ आदमी। श्रेष्ठ विचार वाले, शरीफ, सज्जन आदमी को श्रेष्ठ कहते हैं। वह अंत:करण को संत बना देता है। दूसरा, भगवान जिसे प्यार करते हैं उसे 'सुधारक' बना देते हैं। वह अपने आपको घिसता हुआ चला जाता है तथा समाज को ऊँचा उठाता हुआ चला जाता है। तीसरा, भगवान जिसे प्यार करते हैं उसे 'शहीद' बना देते हैं। शहीद जिसने अपने बारे में विचार ही नहीं किया। समाज की खुशहाली के लिए जिसने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया, वह 'शहीद' होता है। जो दीपक की तरह जला, बीज की तरह गला, वह शहीद कहलाता है। चाहे वह गोली से मरा हो या नहीं, वह मैं नहीं कहता, परंतु जिसने अपनी अक्ल, धन, श्रम पूरे समाज के लिए अर्पित कर दिया, वह शहीद होता है। जटायु ने कहा कि आपने हमें धन्य कर दिया।

आपने हमें शहीद का श्रेय दे दिया, हम धन्य हैं। जटायु, शबरी की एक नसीहत है। यह भगवान की भक्ति है। यही सही भक्ति है।

मित्रो, हनुमान जी भी भगवान राम के भक्त थे। भक्त माँगने के मूड में नहीं रहता है। भक्त भगवान के सहायक होते हैं। वह अपने लिए मकान, रोटी, कपड़ा या अन्य किसी चीज की चाह नहीं करता है, उसका तो हर परिस्थिति में भगवान का सहयोग करना ही लक्ष्य होता है। वह अपनी सारी जिंदगी भगवान के लिए अर्पित कर देता है। हनुमान जी इसी प्रकार के भक्त थे। आज तो भक्त की पहचान है—"राम नाम जपना, पराया माल अपना।" मित्रो, यह भक्ति नहीं है। आज बगुला भक्तों की भरमार है, जो माला को ही सब कुछ मानते हैं। भक्त वही है, जिसका चरित्र एवं व्यक्तित्व महान हो।

साथियो, हिरण्यकशिपु वह है जिसे केवल पैसा दिखलाई पड़ता है। सोना दिखलाई पड़ता है,

ज्ञान दिखलाई नहीं देता है। हिरण्याक्ष, जिसकी आँखों को केवल सोना ही दिखलाई पड़ता है। ये दोनों भाई थे। हिरण्यकशिपु को नरसिंह भगवान ने मारा था और हिरण्याक्ष को वाराह अवतार ने मारा था। आज मनुष्य इसी स्तर का बन गया है। आप लोगों का आज यही स्तर है। आपकी भक्ति नगण्य है। रावण मोह में मारा गया और सीता लोभ में फँस गई और मुसीबत मोल ले बैठी। जो भी व्यक्ति लोभ एवं मोह में फँस जाता है, वह भी इसी तरह मारा जाता है। लक्ष्मण जी ने एक रेखा खींची थी। मित्रो जो भी व्यक्ति अपनी मर्यादा को कायम नहीं रखता है, वह इसी प्रकार दुखी रहता है। आप कायदे एवं नियम का पालन कीजिए, यह हमें रामायण बतलाती है।

भक्ति भी, संघर्ष भी

रामायण में भक्ति भी भरी पड़ी है तथा संघर्ष भी भरा पड़ा है। उसके कण-कण में दिव्य प्रेरणाएँ भरी पड़ी हैं। उसमें तप, संघर्ष दोनों चीजें विद्यमान हैं। इसमें गुरु गोविंद सिंह की तरह एक हाथ में

माला तथा दूसरे हाथ में भाला की बात बतलाई गई है। बेटे, तुम्हें माला की रक्षा के लिए एक हाथ में भाला भी पकड़ना होगा।

रामचंद्र जी गुरु विश्वामित्र जी के साथ यज्ञ-रक्षा के लिए जंगल से होकर जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि यहाँ तो हड्डियों का ढेर लगा है। उन्होंने पूछा कि यह किनका है? ऋषियों ने बतलाया कि यह उन ऋषियों की हड्डियाँ हैं, जिन्हें राक्षसों ने भक्षण करके डाल दिया है। यह देख-सुनकर अंदर आक्रोश भर आया और उन्होंने संकल्प लिया—

निशिचर हीन करों महि, भुज उठाइ प्रण कीन्ह।

जब इस तरह मन में क्रोध आता है तो वे संघर्ष के लिए तैयार हो जाते हैं। रामचंद्र जी कहते हैं कि यद्यपि यह हमारे पूर्वज नहीं हैं, परंतु वे महान व्यक्ति थे, जो समाज के लिए जीते थे। हम इनके लिए संकल्प लेते हैं कि इसके दुश्मन ऐसे दुष्ट

राक्षसों को समाप्त करेंगे तथा धरती पर स्वर्ग का वातावरण बनाएँगे।

संघ शक्ति का महत्त्व

रामचंद्र जी आगे चलते गए। उन्होंने अपने साथ बंदर-भालुओं को लिया। मित्रो, अच्छे काम के लिए जनसहयोग की आवश्यकता होती है। अकेला व्यक्ति कोई बड़ा काम नहीं कर सकता है। कृष्ण भगवान को भी ग्वाल-बालों का सहयोग लेना पड़ा। रामचंद्र जी ने कहा कि हम भगवान हैं, शक्ति हैं और हम अकेले ही रावण को मार सकते हैं, लेकिन यह कायदा नहीं है। हमें जनसहयोग लेकर काम करना चाहिए। आप जनता की शक्ति को लेकर सत्य के लिए आगे बढ़ें। कहा भी गया है—**'सत्यमेव जयते'**। सत्य में हजार हाथी का बल होता है। छोटे-छोटे बंदर-भालुओं के सहयोग से समुद्र में पुल बनता चला गया। मित्रो, जहाँ मन:स्थिति अच्छी होती है, वहाँ परिस्थिति भी अच्छी होती है। एक गिलहरी आई और अपने

बालों में भरकर मिट्टी डालने लगी। इसके श्रम को देखकर बंदर, भालू सहित रामचंद्र जी बहुत प्रसन्न हुए। गिलहरी ने कहा कि हम छोटे हैं। तो क्या हुआ हम भी भगवान के काम में सहयोग करेंगे तथा अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करेंगे। उसकी दिलेरी को देखकर भगवान राम बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे हथेली पर रखा और अपनी उँगलियाँ से उसे सहलाने लगे। सुना है कि रामचंद्र जी काले रंग के थे। उनकी उँगलियाँ काले रंग की थीं। अत: उसके ऊपर काले रंग की लकीरें पड़ गईं। हमने सुना है कि वही लकीर आज तक गिलहरी के खानदान पर पड़ी हुई है।

मित्रो, यह बात सही है कि भगवान के प्यार-मोहब्बत का निशान उसी आदमी के ऊपर होता है, जो अपने को त्यागी, बलिदानी के रूप में आगे कर एक आदर्श प्रस्तुत करता है। उसके बिना कोई आदमी भगवान को प्यारा नहीं हो सकता है। अगर आप दिन-रात भजन-कीर्तन करते हैं, परंतु आपने नेक जीवन,

आदर्श का जीवन, लोगों को ऊँचा उठाने का जीवन नहीं जिया है, अपने व्यक्तित्व को ऊँचा नहीं उठाया है, दूसरों की सेवा नहीं की है, तो आप भगवान का प्यार नहीं पा सकते हैं।

रामायण के हर पन्ने महत्त्वपूर्ण प्रेरणाओं से भरे पड़े हैं। रावण मरा हुआ था। लक्ष्मण ने यह पूछा कि रामचंद्र जी आपने कहा था कि हमने एक तीर मारा है, तो इसके शरीर में हजारों छेद कैसे हो गए? रामचंद्र जी ने कहा—हे लक्ष्मण! हमने तो उसे केवल एक ही तीर मारा है, परंतु वे छिद्र उसके अपने कर्मों के फल हैं। पाप अपने आप में फूटता है। अगर आप पारा खा लें तो वह अपने आप फोड़कर निकल जाता है। उसी प्रकार पाप अपने आप निकलता है। पाप अपने आप खून बहाता है, अपने आप तबाही लाता है।

पाप की परिणति अंततः ऐसी

एक और प्रसंग रामायण में आता है कि रामचंद्र जी की पत्नी सीताजी को जब रावण चुराने

गया था, तो भिखारी का वेश बनाकर गया था। चोर के तरीके से वह वहाँ गया था। इस प्रकार की नीयत या मनःस्थिति जब व्यक्ति की हो जाती है, तो सारी दैवी संपदाएँ ऋद्धि-सिद्धियाँ समाप्त हो जाती हैं। रावण सब चीजों से परिपूर्ण था, परंतु उसकी एक कमी के कारण गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं— **"जिमि कुपंथ पग धरइ खगेशा, रहइ न तेज बुद्धि लव लेशा।"** उसके तेज, बल, धन सब समाप्त हो गए। रावण का सत्यानाश हो गया। सोने की लंका न जाने कहाँ चली गई। सारे कुटुंब का सत्यानाश हो गया। इतने बड़े ज्ञानी, तपस्वी, सामर्थ्यवान व्यक्ति की एक कमी उसका सत्यानाश कर सकती है और वह है चाल-चलन की कमी, चिंतन की कमी।

यही आप लोग समाज को शिक्षण देना कि आप लोग शराफत सीखिए, इनसानियत को सीखिए, भलमनसाहत को सीखिए-अपनाइए। सचाई, श्रेष्ठता, आदर्शवादिता को सीखिए। इसके द्वारा ही

व्यक्ति, परिवार, समाज निर्माण का उद्‌देश्य पूरा होगा। हमें विश्वास है कि आप यहाँ से इस प्रकार की बातें सीखकर जाएँगे तो हमारा उद्‌देश्य पूरा हो सकेगा। हमने अपने मिशन के द्वारा रामायण का प्रशिक्षण राम की दुहाई देने के लिए नहीं, वरन समाज को राम का चरित्र, कार्यपद्धति से अवगत कराने के लिए प्रारंभ किया है, ताकि इसके माध्यम से लोगों को प्रेरणा दी जा सके और समाज को ऊँचा उठाया जा सके। इसके द्वारा हमारे मिशन का व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण का उद्‌देश्य पूरा हो सके। यही हमारा रामायण प्रशिक्षण का उद्‌देश्य है। आशा है आप इसे समझ गए होंगे तथा उसी प्रकार लोगों को समझाने का प्रयास करेंगे। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शांतिः॥

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

ज्ञानयज्ञ में आप भी आहुति दें

समस्त कठिनाइयों का एक ही उद्‌गम है—मानवीय दुर्बुद्धि। जिस उपाय से दुर्बुद्धि को हटाकर सद्‌बुद्धि स्थापित की जा सके, वही मानव कल्याण का, विश्वशांति का समाधानकारक मार्ग हो सकता है।

युगऋषि परम पूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने वर्तमान युग की समस्याओं के समाधान हेतु हजारों पुस्तकें लिखीं हैं। इन पुस्तकों को जन-जन को पढ़ाना, इस युग का युगधर्म है। पुस्तक सूची निम्न पते पर पत्र डालकर निःशुल्क मँगा लें।

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

फैक्स : (०५६५) २५३०२००

E-Mail : yugnirman@awgp.org